डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महाविद्यालय पुपरी

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, द्वितीय-पत्र
दिगंत - भाग - 2 - पद्य भाग

Date: ____ Page: 06/06/21

शीर्षक - कवित्त
कवि - भूषण
लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के किस धारा के कवि हैं? इनका हिन्दी के पाठकों में बहुत सम्मान का कारण क्या है?

उत्तर:- भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। ये हिन्दी साहित्य में जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं। वीर रस के इस महान कवि ने फड़कती हुई मुक्तक शैली में छत्रपति शिवाजी और बुंदेल वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई हैं, इसी कारण हिन्दी पाठकों में सम्मान है।

प्रश्न: कवि भूषण की प्रमुख कृतियों का उल्लेख करें?

उत्तर:- महाकवि भूषण द्वारा रचित शिवराज भूषण (384 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान), छत्रसाल दशक (10 छंदों में छत्रसाल की वीरता का यशोगान) प्रमुख है। भूषण हजारा, भूषण उल्लास इत्यादि प्रसिद्ध रचना भी है।

प्रश्न:- भूषण की पारिवारिक पृष्ठभूमि का परिचय दें।

उत्तर:- कवि भूषण का जन्म 1613ई० में उत्तरप्रदेश के कानपुर के निकट एक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम सम्भवतः भूषण के भाई थे।

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'गोदान' उपन्यास
लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

डॉ० देव चरन प्रसाद
Date एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महाविद्यालय
06/06/21

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- घटना प्रधान उपन्यासों का वर्णन करें।

उत्तर: उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के पूर्व हिन्दी में घटना प्रधान उपन्यासों का विशेष महत्व था। घटना-प्रधान उपन्यासों में तिलिस्मी-ऐयारी, जासूसी और अद्‌भुत घटना प्रधान उपन्यास हैं। तिलिस्म शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'इन्द्रजाल' है। तिलिस्म बाँधने में बड़े-बड़े तांत्रिकों और गुणियों की सहायता ली जाती थी। ऐयारी तिलिस्म तोड़ने में कुशल व्यक्तित्व कहा जाता है। इन तिलिस्मी ऐयारी उपन्यासों के प्रवर्तक बाबू देवकीनन्दन खत्री थे। इन्होंने 1888ई में चन्द्रकान्ता उपन्यास लिखा था। इसके 24 भाग हैं। इस उपन्यास की इतनी अधिक लोकप्रियता हुई कि सैकड़ों युवकों ने इसे पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी थी। जासूसी उपन्यासों में गोपाल राम गहमरी ने 'हीरे की चोरी' उपन्यास की रचना की जो बंगला उपन्यास का अनुवाद था। अद्‌भुत घटना प्रधान उपन्यासों में रोमांचकारी रहस्यों को अपने में समेटने वाले उपन्यास थे। इनमें निहालचन्द वर्मा का 'प्रेतका-फल' प्रसिद्ध है।

प्रश्न:- हिन्दी उपन्यास के प्रति मुंशी प्रेमचन्द का क्या दृष्टिकोण था?

उत्तर:- मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासकार थे। वे साहित्य को समाज का दर्पण मानते हुए उसे दीपक बनाने के समर्थक थे। इसीलिए उन्होंने अपने समाज की ज्वलन्त समस्याओं को अपने उपन्यासों की विषय-वस्तु बनाया है। उस समय राष्ट्रीय भावना एवं स्वतंत्रता आन्दोलन जोरों पर था। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन का जादुई असर छात्रों, वकीलों, सरकारी कर्मचारियों तथा आम जनता पर था। इसी भावना को लेकर प्रेमचन्द जी ने प्रसिद्ध उपन्यास कर्मभूमि की रचना की।

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

निबंधमाला - गद्य खण्ड

शीर्षक - आखिर पढ़ने से होता क्या है Date: Page:

लेखक - प्रो० केसरी कुमार

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- पढ़ने में भेद होता है इस सन्दर्भ में लेखक का क्या मत है?

उत्तर :- प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि पढ़ने में भेद होता है। कोई अक्षर पढ़ता है कोई शब्द पढ़ता है और कोई न अक्षर पढ़ता है न शब्द पढ़ता है केवल भाव पढ़ता है। यह भाव ही साहित्य की मूल वस्तु है। भाषा तो छठी अंगुली, तीसरे पाँव की तरह है। यह चश्मा है, पढ़ा और उतार कर रख दिया। इस प्रकार लेखक ने भाव को प्रधान माना है।

प्रश्न :- लिखने वाले से पढ़ने वाले क्यों विलक्षण होते हैं?

उत्तर :- निबंधकार प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि लिखने वाले से पढ़ने वाला कहीं ज्यादा विलक्षण होता है। कभी-कभी तो पढ़ने वाले अर्थ दोहन कर लिखने वाले को वह ख्याति दिला देते हैं जैसा कि लिखने वाला लिखते समय सोचता भी नहीं है। मानस की मन्थरा केवल एक कुटिल नारी का प्रतीक बनकर आयी थी, परन्तु गोस्वामी तुलसीदास को क्या पता था कि एक दिन ऐतिहासिक यथार्थ का पर्याय बन जायेगी। सहज रूप में लिखी गई जैनेन्द्र की 'पत्नी' कहानी का अधूरापन ही उनकी कहानी को सर्वश्रेष्ठ कहानी बना देगी। इस बात को जैनेन्द्र भी नहीं जानते थे।

प्रश्न :- निबंधकार पढ़ने की तरह ही लिखने की अनिवार्यता क्यों बताते हैं?

उत्तर :- प्रो० केसरी कुमार का कहना है कि पढ़ाई के साथ-साथ लेखक के लिए लेखन कार्य भी अति आवश्यक है। उनका कहना है कि रचना एक मजबूरी है। पीड़ा को बाहर निकालने का एक बहाना है जिसके चलते आनन्द के क्षणों का सृजन होता है। लेखक प्रायः आत्माभिव्यक्ति, सामाजिक दायित्व, विद्रोह के कारण लिखते हैं। प्रत्येक रचनाकार एक न खत्म होने वाली खोज से ग्रसित होता है और वह हर रचना में अपने आप को एक नये अनुभव के साथ खोजता चलता है।

शेष आगे —

Date _____ Page _____

इस प्रकार नकेनवादी साहित्यकार प्रो० केसरी कुमार ने किसी भी रचना के विषय एवं शिल्प को नये दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया है। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में उनका नाम गर्व से लिया जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 06/06/21
रा० उ० सं० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ